शेख़ फ़रीद - सबद ३८
जोबन जांदे ना डरां जे सह प्रीति न जाइ ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७९

जोबन जांदे ना डरां जे सह प्रीति न जाइ ॥
फरीदा कितीं जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाइ ॥३४॥

सार: आध्यात्मिक शक्ति इस बात पर निर्भर नहीं करती कि हम कितने लंबे समय तक जीवित रहते हैं, हम कितने शक्तिशाली दिखते हैं या हमारी परिस्थितियाँ कैसी हैं। यह एकता के सत्य से निरंतर जुड़ाव से प्रवाहित होती है, सभी के भीतर प्रियतम, उस दिव्य उपस्थिति से है जो सबमें विद्यमान है। जब इस उपस्थिति के लिए हमारा प्रेम जीवंत रहता है तब जीवन के अनिवार्य परिवर्तनों का भय हमारे अस्तित्व की नींव को हिला नहीं सकता। आध्यात्मिक पतन समय बीतने के कारण नहीं बल्कि तब होता है जब इस संबंध की हमारी स्मृति धुंधली पड़ जाती है और उसकी जगह भय या अहंकार ले लेता है। सभी को जोड़ने वाले प्रेमपूर्ण और पोषणकारी संबंध को अपनाकर सच्ची जीवन शक्ति और उद्देश्य की खोज करें।

जोबन जांदे ना डरां जे सह प्रीति न जाइ ॥
मुझे यौवन के ढलने का भय नहीं बशर्ते मेरे प्रियतम के प्रति मेरा प्रेम कम न हो। यह दर्शाता है कि यदि एकता का बंधन न टूटे तो आध्यात्मिक पतन का कोई भय नहीं है।

फरीदा कितीं जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाइ ॥३४॥
फ़रीद कहते हैं कि यौवन में रहकर भी प्रेम बिना कई लोग सूखकर मुरझा गए हैं। यह उदाहरण प्रस्तुत करता है कि चिंतन और जागरूकता के बिना एक जीवंत बाहरी जीवन भीतर से आध्यात्मिक रूप से मुर्दा हो सकता है। (३४)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद, यौवन, बंधन, प्रेम और क्षय के रूपकों के माध्यम से एकता के शाश्वत सत्य को प्रकट करते हैं। उनका संदेश इस बात पर प्रकाश डालता है कि एकता के बिना हर चीज़ अपनी चमक खो देती है जो भौतिक जीवन शक्ति का क्षीण होना नहीं बल्कि मूल्यों का लुप्त होना है। जब तक सार्वभौमिकता को लाभ पहुँचाने वाले उद्देश्यों के साथ हमारा आंतरिक जुड़ाव ज़िंदा रहता है हमें किसी भी बाहरी पतन का भय नहीं रहता। एकता के प्रति यह प्रेम सर्वव्यापी, अनंत और निराकार ऊर्जा से हमारे जुड़ाव का एक जीवंत बोध है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com